व्याकरण वृक्ष–7

पाठ–1 भाषा, बोली, लिपि तथा व्याकरण

[Language, Dialect, Script and Grammar]

(क) 1. हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है।

2. भाषा वह साधन है, जिसके द्‌वारा मनुष्य अपने मनोभावों तथा विचारों को बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुँचाता है।

3. भाषा विचारों तथा भावों के आदान-प्रदान का साधन है। जबकि बोली, भाषा का क्षेत्रीय रूप है।

4. भावों को बोलकर अभिव्यक्त करना भाषा का मौखिक रूप है।

5. किसी भी भाषा की शुद्‌धता के नियमों को सिखाने वाला ग्रंथ व्याकरण कहलाता है।

6. लिखित भाषा द्‌वारा ही हम ज्ञानकोश को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं।

7. भारतीय संविधान द्‌वारा 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।

8. भाषा को लिखने के लिए निर्धारित चिह्नों को लिपि कहते हैं।

9. भाषा का मूल रूप मौखिक होता है। यह मुख के द्‌वारा बोली जाने के कारण मौखिक कहलाती है। वहीं भाषा के लिखित रूप में व्यक्ति अपनी बात लिखकर स्पष्ट करता है तथा दूसरा पढ़कर इसे समझता है।

10. भाषा की शुद्‌धता संबंधी नियम व्याकरण सिखाता है।

(ख) 1. रोमन 2. बाईस 3. व्याकरण 4. अधिक
5. सीमित 6. ध्वनियों

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓
5. ✗ 6. ✗ 7. ✓ 8. ✓

(घ) 1. असम – असमिया, बंगाल – बांग्ला, गुजरात – गुजराती, पंजाब – पंजाबी, तमिलनाडु – तमिल

(ङ) 1. कन्नड़, तेलुगु, सिंधी, पंजाबी, मराठी, मणिपुरी

(च) 1. फ़ारसी, देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी

(छ) 1. स 2. स 3. अ 4. द 5. स

पाठ–2 वर्ण–विचार [Phonology]

(क) 1. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि, जिसके और टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है; जैसे– अ, क्, च् आदि।

2. किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के क्रमबद्‌ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में 52 वर्ण हैं।

3. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली हवा मुख के किसी भी भाग से बिना टकराए अबाध गति से बाहर निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं; जैसे– अ, आ, इ, ई आदि।

स्वर के तीन भेद हैं–

- ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ।
- दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
- प्लुत स्वर - ओ३म्, हे रा३म् आदि।

4. जो व्यंजन दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बनते हैं, वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
5. (अ) जिस वर्ण के उच्चारण में हवा केवल नाक से निकलती है, उसे अनुस्वार कहते हैं तथा जिन वर्णों के उच्चारण के समय हवा नाक और मुख दोनों से निकलती है, वे अनुनासिक कहलाते हैं।

   (ब) जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, वे अल्पप्राण कहलाते हैं। वहीं जिन वर्णों के उच्चारण में वायु अधिक मात्रा में निकलती है, वे महाप्राण कहलाते हैं।

   (स) जब एक व्यंजन का अपने समरूप व्यंजन से मेल होता है, तब वह द्‌वित्व व्यंजन कहलाता है। वहीं जो व्यंजन दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बनते हैं, वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं।
6. जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है और बोलते समय मुख से निकलने वाली वायु मुख के अलग-अलग भागों से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

   व्यंजन के भेद– स्पर्श व्यंजन - कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग

   अंत:स्थ व्यंजन - य, र, ल, व

   ऊष्म व्यंजन - श, ष, स, ह

(ख) 1. व् + ऐ + ज् + ञ् + आ + न् + इ + क् + अ

2. द् + ऋ + श् + य् + अ

3. त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ

4. श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ

5. स् + व् + आ + ध् + ई + न् + अ

6. प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ

7. क् + ऋ + ष् + ण् + अ

8. ग् + उ + ल् + आ + म् + ई

(ग) 1. गाँव 2. जंगली 3. गंगा 4. दंड

5. कहाँ 6. खाँसी

(घ) 1. राज, राज़ 2. सजा, सज़ा 3. बाल, बॉल

(ङ) 1. फलत: 2. परंतु 3. चाँदनी 4. स्वस्थ 5. कक्षा

6. प्रज्ञा 7. श्रीमती 8. पर्वत 9. बुद्‌धि 10. बीमारी

(च) 1. आ- कंठ, ई- तालु, ष- मूर्धा, त- दंत,

व- दंतोष्ठ, ओ- कंठोष्ठ

(छ) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

6. ✓ 7. ✓ 8. ✓ 9. ✓

(ज) 1. ब 2. द 3. अ 4. अ 5. स

पाठ–3 उच्चारण और वर्तनी [Pronunciation and Spelling]

(क) 1. मिट्टियाँ 2. रक्त 3. विद्वान 4. विद्यालय
5. प्रसिद्ध 6. सत्ताईस 7. ब्रह्म 8. चिह्न
9. द्वितीय 10. रद्दी 11. बुड्ढा 12. बाह्य

(ख) 1. उपर्युक्त 2. इकलौता 3. शाप 4. प्रशंसा 5. सामग्री
6. अहल्या 7. शीर्षक 8. कार्यक्रम 9. परमात्मा 10. पत्नी
11. सामाजिक 12. चाहिए 13. ईमानदार 14. परीक्षा 15. अतिथि
16. हथिनी 17. अधीन 18. कवि 19. अभीष्ट 20. नमस्कार
21. रामायण 22. सच्चरित्र 23. स्वच्छंद 24. सरोजिनी 25. नाराज़
26. बादाम 27. आराम 28. बरात 29. दीवाली 30. आदर्श

(ग) 1. बुढ़ापे, सीढ़ियाँ 2. सेना, सैनिक 3. सीधा, लड़ाई 4. गुरु, वापस
5. वधू, घाघरा 6. ऋषि, ऋग्वेद 7. त्योहार, पौराणिक 8. झूठा, धोखा

(घ) 1. ब 2. अ 3. द 4. स 5. स
6. स 7. ब 8. अ 9. ब 10. ब

पाठ–4 संधि [Joining]

(क) 1. 'संधि' संस्कृत भाषा का शब्द है।
2. 'संधि' का अर्थ है- जोड़ अथवा मेल-मिलाप।
3. दो स्वरों के पारस्परिक मेल से होने वाला विकार या परिवर्तन 'स्वर संधि' कहलाता है। इसके पाँच भेद हैं– दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।
4. जब व्यंजन ध्वनि के पास कोई स्वर या व्यंजन आता है, तो होने वाला परिवर्तन 'व्यंजन संधि' कहलाता है।
5. विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन आता है। यही परिवर्तन 'विसर्ग संधि' कहलाता है।

(ख) स्वर संधि - गायक, नरेंद्र, सदैव, स्वच्छ, अत्युत्तम, शिरोरेखा।
व्यंजन संधि - वागीश, विच्छेद, संसार, दिग्गज, संचय, उच्चारण, संवाद।
विसर्ग संधि - निर्धन, दुर्जन, मनोरथ, निष्प्राण, निरर्थक।

(ग) 1. अत्यधिक 2. सागरोर्मि 3. महोदधि 4. मतैक्य
5. भारतेंदु 6. शचींद्र 7. परीक्षार्थी 8. धर्मार्थ
9. भून्नति 10. निष्फल

(घ)

संधि	**संधि-विच्छेद**	**संधि-भेद**
नरेंद्र	नर + इंद्र	गुण संधि
दुस्तर	दुः + तर	विसर्ग संधि
व्यूह	वि + ऊह	यण संधि
निर्मल	निः + मल	विसर्ग संधि
नयन	ने + अन	अयादि संधि
सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि

देवर्षि	देव + ऋषि	गुण संधि
दुश्चक्र	दु: + चक्र	विसर्ग संधि
यथार्थ	यथा + अर्थ	दीर्घ संधि
मनोयोग	मन: + योग	विसर्ग संधि
अत्यंत	अति + अंत	यण संधि
जगदीश	जगत् + ईश	व्यंजन संधि
महैश्वर्य	महा + ऐश्वर्य	वृद्धि संधि
अभिषेक	अभि + सेक	व्यंजन संधि

(ङ) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
6. ✓ 7. ✗

(च) 1. अ 2. स 3. अ 4. अ
5. अ 6. ब 7. द 8. द

रचनात्मक गतिविधि – छात्र स्वयं करें।

पाठ–5 शब्द–विचार [Morphology]

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बनने वाले सार्थक तथा स्वतंत्र ध्वनि समूह को 'शब्द' कहते हैं।

2. दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने सार्थक तथा स्वतंत्र ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं। शब्द को जब वाक्य में पिरोया जाता है, तब वह पद कहलाता है। शब्द एक स्वतंत्र तथा निश्चित अर्थ में बँधा होता है, वहीं वाक्य में आने के बाद शब्द व्याकरण के नियमों में बँधकर कार्य करता है, फिर उसकी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।

3. तत्सम शब्द संस्कृत भाषा से लिए गए हैं।

4. वे शब्द, जो भिन्न-भिन्न भाषाओं के मेल से बनते हैं, उन्हें संकर शब्द कहते हैं।

5. जो शब्द तत्सम या तद्भव न होकर अपने ही देश की भिन्न-भिन्न क्षेत्रीय बोलियों से हिंदी भाषा में अपनाए गए हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं।

6. बनावट के आधार पर शब्द के भेद तीन हैं–

रूढ़ शब्द – जो शब्द परंपरा से ही किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त होते हैं और उन्हें खंडित करने पर उनके खंडों से कोई अर्थ नहीं निकलता है, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे– आदमी, सिंह आदि।

यौगिक शब्द – दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बनने वाले ऐसे शब्द जिनके खंड किए जा सकते हैं और जिनका प्रत्येक खंड सार्थक होता हैं; जैसे– देव + आलय = देवालय, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी आदि।

योगरूढ़ शब्द – दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बनने वाले ऐसे शब्द, जो किसी विशिष्ट अर्थ के बोधक होते हैं, उन्हें योगरूढ़ कहते हैं; जैसे– नीलकंठ (नीला है कंठ जिसका) नीला कंठ भगवान शिव का माना गया है, अत: 'नीलकंठ' 'शिव' के अर्थ में रूढ़ हो गया है।

7. जो शब्द अर्थबोधक नहीं होते, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं।
8. जो शब्द अर्थबोधक होते हैं, उन्हें सार्थक शब्द कहा जाता है।
9. जिन शब्दों के खंड न हो सकें, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं।
10. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा जाता है– विकारी शब्द और अविकारी शब्द।
11. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार परिवर्तन आता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। वहीं जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन और कारक आदि के अनुसार परिवर्तन नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

(ख) 1. रूढ़ शब्द– देश, लड़का, आदमी
यौगिक शब्द– विद्यालय, देवालय, असभ्य
योगरूढ़ शब्द– हिमालय, जलज, नीलकंठ

(ग) 1. शब्द 2. निरर्थक 3. विकारी शब्द
4. तद्भव, विदेशज, संकर 5. बनावट या रचना

(घ)

तत्सम	–	घृत
तद्भव	–	साँप
देशज	–	चूड़ी
विदेशज	–	संतरा
संकर	–	किताबघर

(ङ) घी - घृत, गाँव - ग्राम, कीड़ा - कीट, कोयल - कोकिल, मोती - मौक्तिक, खेत - क्षेत्र, नाक - नासिका, हड्डी - अस्थि, कबूतर - कपोत, गिनती - गणना।

(च) 1. ब 2. स 3. द 4. ब 5. अ

पाठ-6 पर्यायवाची शब्द [Synonyms]

(क) 1. हरि 2. उपेक्षा 3. त्रिलोचन 4. गिरि
5. धरा 6. सुधी 7. पाहन

(ख) 1. अभिलाषा, कामना
2. नर, आदमी
3. दानव, दैत्य
4. सुरलोक, देवलोक
5. काया, शरीर
6. हस्त, कर
7. सदन, आलय
8. शेर, केसरी

(ग) संसार – भव, पयोधि – समुद्र, बिंब – छाया, मीन – मछली,
वाणी – सरस्वती, ध्वज – झंडा, वित्त – धन।

(घ) 1. द 2. स 3. अ 4. ब 5. द

पाठ-7 अनेकार्थी शब्द [Words with various meanings]

(क) 1. कनक - धतूरा, सोना

धतूरा खाने से व्यक्ति पागल होता है, किंतु सोना पा लेने से ही व्यक्ति पागल हो जाता है।

2. आम - साधारण, एक फल (आम)

महँगाई के युग में साधारण व्यक्ति आम कहाँ खा सकता है?

3. वार - दिन, आक्रमण

दिन के समय शत्रु सेना पर आक्रमण कर देना चाहिए।

4. श्यामा - यमुना, राधा

यमुना किनारे खड़ी राधा श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा कर रही थीं।

5. पानी - सम्मान, चमक, जल

मनुष्य के लिए सम्मान मोती के लिए चमक तथा आटे के लिए जल आवश्यक है।

(ख) 1. चेतन 2. शिव 3. समाधान 4. संख्या 5. नौ

(ग) 1. हल 2. आम 3. गुण 4. उत्तर

(घ) 1. ब 2. अ 3. स 4. स 5. अ

पाठ-8 एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द

[Words apparently similar in meanings]

(क) 1. सेवा 2. जीवनी 3. लज्जा 4. दान 5. संतोष

(ख) बंधु – घनिष्ठ मित्र

अनुज – छोटा भाई

आधि – मानसिक रोग

पत्नी – किसी की विवाहिता स्त्री

भ्रम – मिथ्या अनुभूति

(ग) 1. ब 2. द 3. स 4. अ 5. ब

पाठ-9 समरूपी (श्रुतिसम) भिन्नार्थक शब्द [Homophones]

(क) 1. आगे, कठोर 2. पर्वत, पृथ्वी 3. ब्रह्मा, बकरी 4. वंश, किनारा

(ख) 1. कृपणता 2. अपेक्षा 3. सम्मान

4. अर्घ्य 5. खाद 6. हंस

(ग) 1. सफ़ेद 2. खज़ाना 3. घर 4. सोना 5. पुत्र

(घ)

(क)	(ख)
कोष	खज़ाना
मास	महीना
श्वेत	सफ़ेद
दश	दस

अंस	कंधा
नग	पर्वत
कुल	वंश
वदन	मुख
पाणि	हाथ
मूल	जड़
शाम	संध्या

(ङ) 1. स 2. ब 3. द
4. स 5. ब 6. ब

पाठ–10 विलोम शब्द [Antonyms]

(क) हँसना – रोना, ज्ञानी – अज्ञानी, गुरु – शिष्य, दिन – रात

(ख) 1. जंगम 2. घृणा 3. पुरातन 4. दाता
5. सूक्ष्म 6. नीरस 7. दीर्घ 8. असभ्य

(ग) लौकिक – अलौकिक, उत्तम – अधम, मान – अपमान, आज्ञा – अवज्ञा, कृतज्ञ – कृतघ्न

(घ) 1. आलसी, असफलता 2. व्यय 3. देश
4. प्रेम 5. जीत

(ङ) 1. अस्वस्थ, असुर, अलौकिक, अनिश्चित, असभ्य, असफल, असत्य।

(च) 1. शिष्य 2. अचर 3. ह्रास 4. गौण 5. अज्ञानी
6. अमृत 7. चेतन 8. अंत 9. स्वाभाविक 10. कुमति

(छ) 1. अ 2. द 3. स 4. ब

पाठ–11 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

[One word substitution]

(क) 1. दर्शनीय 2. सुग्रीव 3. परोक्ष
4. शैव 5. दत्तक 6. निराकार

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓
5. ✗ 6. ✗

(ग) 1. ख 2. क 3. ज 4. ग
5. घ 6. ङ 7. छ 8. च

(घ) 1. ब 2. ब 3. अ 4. अ 5. अ

पाठ–12 समूहवाची शब्द [Words Denoting Group]

(क) पर्वतों की – श्रृंखला, मधुमक्खियों का – छत्ता, पशुओं का – झुंड, मनुष्यों की – भीड़, राज्यों का – संघ

(ख) 1. द 2. द 3. ब 4. स 5. अ

(ग) 1. जत्था – हमारे मोहल्ले से कल सत्याग्रहियों का जत्था निकला।
2. कुंज – बगीचे के बीचों-बीच एक लता-कुंज बना हुआ है।
3. श्रेणी – विद्यार्थी अपनी श्रेणी के अनुरूप प्रार्थना सभा में खड़े होते हैं।
4. वर्ग – अध्यापिका ने पाँचवीं कक्षा के चार वर्ग बनाए।
5. सभा – सभापति ने सबको संबोधित करते हुए सभा में भाषण दिया।

पाठ–13 विविध [Miscellaneous]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–14 शब्द-निर्माणः उपसर्ग [Prefix]

(क) 1. उपसर्ग की विशेषता है कि वे सदैव शब्द के प्रारंभ में लगते हैं तथा इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है।
2. जिन शब्दांशों को मूल शब्द के पहले लगाने से शब्दों का अर्थ बदलता है या उनमें विशिष्टता आती है, उन्हें उपसर्ग कहते हैं;
जैसे- उप + हार = उपहार।

(ख) पराजय, कुपुत्र, अवगुण, दुर्लभ, अज्ञान, अनादर

(ग)

उपसर्ग	मूल शब्द
स	फल
कु	पुत्र
स	जल
दुर्	बल
वि	जय
सत्	जन
भर	पेट
उप	वन

(घ) 1. प्रबंध 2. सुगम 3. बेदम 4. नीरस
5. आदेश 6. विशेष 7. अनुकूल 8. लाइलाज
9. अबोध 10. नाराज़ 11. प्रहार 12. सहगान

(ङ) ना – लायक, अप – मान, भर – पूर, पुनर् – जन्म, कु – मार्ग,
वि – योग, परा – क्रम, उत् – कंठ, अनु – रूप, नि – डर

(च) अव + गुण = अवगुण
बा + अदब = बाअदब
वि + शेष = विशेष
चिर + जीवी = चिरंजीवी
सु + कर्म = सुकर्म
स्व + तंत्र = स्वतंत्र

(छ) 1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. ब

(ज)	1. स	2. अ	3. अ	4. स	5. स

(झ) 1. निपात, निवास
2. निर्बल, निर्मल
3. अधिकार, अधिनायक
4. सज्जन, सत्कार

पाठ-15 शब्द-निर्माण : प्रत्यय [Suffix]

(क) जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर नवीन शब्द निर्मित करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे– खेल + आड़ी (खिलाड़ी)

(ख)	चमक	ईला	–	चमकीला
	तैराक	ई	–	तैराकी
	बोल	ई	–	बोली
	बिछ	औना	–	बिछौना
	मुख	इया	–	मुखिया
	कम	उम्र	–	कमउम्र
	उड़	ता	–	उड़ता
	बुन	आई	–	बुनाई

(ग)	आनंदित	–	आनंद	–	इत
	श्रद्धालु	–	श्रद्धा	–	आलु
	जातीय	–	जाति	–	ईय
	रंगीला	–	रंग	–	ईला
	खटास	–	खट्टा	–	आस
	रोगी	–	रोग	–	ई
	रोया	–	रो	–	या
	पढ़ाई	–	पढ़	–	आई

(घ) 1. ठेला, झूला
2. सुनील, सुशील
3. फैलाव, बिखराव
4. गरिमा, लालिमा
5. रंगीला, चमकीला
6. बुनाई, पढ़ाई

(ङ)	1. उपसर्ग, प्रत्यय	2. तद्धित	3. कृत् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय
	4. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय	5. आन	6. भुलक्कड़, बुझक्कड़

(च)	1. ✗	2. ✓	3. ✓	4. ✓
	5. ✓	6. ✗	7. ✗	

(छ)	1. अ	2. द	3. ब	4. ब	5. द
(ज)	1. स	2. ब	3. द	4. अ	5. अ

पाठ-16 शब्द-निर्माण : समास [Compound]

(क) दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं; जैसे– नीलकमल– नीला है जो कमल।

(ख) 1. हमें शक्तिनुसार कार्य करना चाहिए।
2. हमीर ने कहा– "शरणागत की रक्षा करना राजपुत्र का कर्तव्य है।"
3. चंद्रमुखी ने गंगाजल से भरी मटकी सिर के ऊपर रखकर गृहप्रवेश किया।
4. तुलसीदास के अनुसार हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि के हाथ में है।

(ग) 1. त्रिलोचन, बहुव्रीहि समास
2. नर-नारी, द्वंद्व समास
3. चौराहा, द्विगु समास
4. धर्मवीर, तत्पुरुष समास (अधिकरण)
5. तुलसीकृत, तत्पुरुष समास (करण)

(घ) धर्मवीर – अधिकरण तत्पुरुष समास
ऋणमुक्त – अपादान तत्पुरुष समास
तुलसीकृत – करण तत्पुरुष समास
ग्रामगत – कर्म तत्पुरुष समास
रसोईघर – संप्रदान तत्पुरुष समास
गंगाजल – संबंध तत्पुरुष समास

(ङ) 1. अज्ञान 2. ऊँच-नीच 3. घनश्याम
4. चक्रधर 5. रातोंरात 6. गुणयुक्त

(च) 1. द्वंद्व समास 2. उत्तर 3. हर माह
4. कर्मधारय समास, बहुव्रीहि समास 5. अव्ययीभाव समास

(छ) 1. ऋण से मुक्त – अपादान तत्पुरुष समास
2. घोड़ों की दौड़ – संबंध तत्पुरुष समास
3. जीवनभर – अव्ययीभाव समास
4. नौ रत्नों का समूह – द्विगु समास
5. रात ही रात में – अव्ययीभाव समास
6. पीला है जिसका अंबर अर्थात कृष्ण – बहुव्रीहि समास

(ज) नीलकंठ - नीला है जो कंठ (कर्मधारय समास)
नीला है कंठ जिसका (बहुव्रीहि समास)
अर्थात (शिव)
दशानन - दस हैं जिसके मुख (कर्मधारय समास)
दस हैं आनन(मुख)जिसके (बहुव्रीहि समास)
अर्थात (रावण)

(झ) 1. अ 2. ब 3. ब 4. स
5. अ 6. स 7. ब

पाठ–17 संज्ञा [Noun]

(क) 1. इस भ्रष्टाचार के युग में भी कई हरिश्चंद्र देखने को मिल जाते हैं।
2. जयचंदों के कारण देश पर संकट के बादल मँडराते हैं।
3. आज के युग में भी रावणों की कमी नहीं है, जो स्त्रियों को वर्तमान समय में स्वयं से हीन समझते हैं।

(ख) 1. जातिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. जातिवाचक संज्ञा
4. जातिवाचक संज्ञा

(ग) 1. बिसेसर, सुखिया, धान 2. लतीफ, गाँव 3. आदम, गाँधी जी, उर्दू
4. दिल्ली, दिनेश, तार

(घ) सेना – समुदायवाचक संज्ञा, शेर – जातिवाचक संज्ञा, मुंबई – व्यक्तिवाचक संज्ञा, चाँदी – द्रव्यवाचक संज्ञा

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) छात्र स्वयं करें।

(छ)	1. द	2. ब	3. अ	4. स
	5. ब	6. स	7. द	8. अ
(ज)	1. अ	2. द	3. स	4. ब
	5. ब	6. स	7. द	

पाठ–18 लिंग [Gender]

(क) लिंग के दो भेद हैं - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

(ख)	1. पुल्लिंग	2. स्त्रीलिंग	3. स्त्रीलिंग	4. पुल्लिंग
	5. स्त्रीलिंग	6. स्त्रीलिंग	7. पुल्लिंग	8. पुल्लिंग
(ग)	1. महाराजा	2. कवयित्रियों	3. मालिन	
	4. सेठानी	5. हंसिनी		

(घ)	1. पुल्लिंग	2. स्त्रीलिंग	3. पुल्लिंग	4. स्त्रीलिंग	5. स्त्रीलिंग
	6. पुल्लिंग	7. पुल्लिंग	8. स्त्रीलिंग	9. स्त्रीलिंग	10. पुल्लिंग
(ङ)	1. इया	2. इका	3. इन		
	4. नी	5. आनी	6. इनी		

(च) 1. भेड़िया आक्रमणकारी चाल चल रहा था।
2. हमारी माता जी आ रही हैं।
3. वृद्धा से चला नहीं जा रहा।
4. मोर वर्षा में नृत्य कर रहा है।
5. हमारी हिंदी की अध्यापिका नहीं आई।

(छ) वर, बूढ़ा, नेता, पंडित, नायक, वीर, शिष्य, क्षत्रिय, बैल, धोबी।

(ज) छात्र स्वयं करें।

(झ)	1. ब	2. ब	3. स	4. ब
	5. द	6. द	7. ब	

पाठ–19 वचन [Number]

(क) वचन के दो भेद हैं–
एकवचन – पत्ता, पंखा आदि।
बहुवचन – पत्ते, पंखे आदि।

(ख) 1. सदैव बहुवचन 2. सदैव एकवचन 3. सदैव एकवचन
4. सदैव एकवचन 5. सदैव एकवचन 6. सदैव बहुवचन
7. सदैव बहुवचन 8. सदैव बहुवचन

(ग) 1. अध्यापिकाएँ 2. स्त्रियाँ 3. बेटियाँ
4. मुरगे 5. चाबियाँ

(घ) 1. वह केले खा रही है।
2. गीतिका ने प्रश्नों के उत्तर लिखे।
3. बाजार में गुड़ियाँ बिकती हैं।
4. नानी ने कहानियाँ सुनाई।
5. पेड़ पर चिड़ियाँ बैठी हैं।
6. लड़के क्रिकेट खेलते हैं।
7. जंगल में मोर नाच रहे हैं।

(ङ) 1. भेड़िए 2. नारियाँ 3. गौएँ 4. छात्रों
5. सभाएँ 6. कटोरियाँ 7. कौए 8. चरखे
9. रुपए 10. माताएँ

(च) छात्र स्वयं करें।

पाठ–20 कारक [Case]

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ निश्चित होता है, उसे कारक कहते हैं। इसके आठ भेद हैं– कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(ख) 1. ने, को, के 2. के, ने, को, के लिए 3. ने, में, के
4. पर, ने, से, को

(ग) 1. कर्ता कारक 2. करण कारक 3. करण कारक
4. अधिकरण कारक 5. संप्रदान कारक 6. संबोधन कारक
7. संबंध कारक

(घ) कर्ता कारक – ने, संबोधन कारक – हे, अरे, अधिकरण कारक – में, पर, कर्म कारक – को, करण कारक – से (के द्वारा), संबंध कारक – का, के, की, अपादान कारक – से (अलग होना), संप्रदान कारक – को, के लिए।

(ङ) 1. अपादान कारक
2. अपादान कारक
3. करण कारक

4. करण कारक
5. करण कारक

(च) 1. ब 2. द 3. ब 4. अ 5. ब
6. ब

पाठ–21 सर्वनाम [Pronoun]

(क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जैसे– मैं, हम, तुम, वे आदि।

(ख) 1. यह लाल रंग की कार किसकी है?
2. कल मुझे बाज़ार जाना है।
3. उन्होंने केले खा लिए हैं।
4. उसने मुझे पुस्तक दी है।
5. तुझे पिता जी ने बुलाया है।

(ग) मैं, मुझे, मैंने, आपने, वे।

(घ) 1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 2. प्रश्नवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम 4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

(ङ) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(च) हम–पुरुषवाचक, कुछ–अनिश्चयवाचक, क्या–प्रश्नवाचक, जो-सो–संबंधवाचक, यह–निश्चयवाचक

(छ) राजा ने कहा– "जान-माल की रक्षा के लिए मैं राजा बना, तब तेरा माल छीनने का मुझे अधिकार ही क्या है? तूने बेकार ही जूते घिसे। गाँव के पंचों ने तेरे साथ बेइंसाफी नहीं की। तू खुशी-खुशी यह कलश अपने घर ले जा। तेरी मेहनत तेरा ही फल है।

(ज) 1. ब 2. ब 3. अ 4. ब
5. द 6. ब 7. स 8. स

पाठ–22 विशेषण [Adjective]

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं; जैसे– <u>काले</u> बादल, <u>नीला</u> आकाश। यहाँ रेखांकित शब्द बादल और आकाश की विशेषता को बता रहे हैं।
2. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध करवाएँ, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। वहीं जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध करवाएँ, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(ख) 1. वह लड़की बहुत मधुर गाती है, यह नहीं।
2. बड़ा है, मान जा, वह लड़का तो अभी बच्चा है। उसे क्या समझाऊँ?
3. उसने मेरी घड़ी चुराई है, इस लड़के ने नहीं चुराई।
4. वे लोग आपस में झगड़ रहे हैं, उन्हें समझाइए।
5. यह लड़की रोज स्कूल आती है, किंतु वह नहीं।

(ग) 1. मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था 2. संख्यावाचक
3. गुणवाचक विशेषण 4. प्रविशेषण 5. कुलीन 6. योगी
7. अंकित 8. सार्वनामिक विशेषण

(घ) वह बगीचा – सार्वनामिक विशेषण, तोला भर चाँदी – परिमाणवाचक विशेषण, सुंदर बच्ची – गुणवाचक विशेषण, पाँच सौ रुपए – संख्यावाचक विशेषण।

(ङ) 1. दो किलो, आधा किलो, दस ग्राम – निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
2. वह – सार्वनामिक विशेषण
3. सुगंधित – गुणवाचक विशेषण
4. सब – सार्वनामिक विशेषण
5. चमकीले – गुणवाचक विशेषण
6. हरे-भरे – गुणवाचक विशेषण
7. दस किलो – निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
8. चालाक – गुणवाचक विशेषण
9. थोड़ी – अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
10. कुछ – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(च)

उच्च,	उच्चतर,	उच्चतम
श्रेष्ठ,	श्रेष्ठतर,	श्रेष्ठतम
लघु,	लघुतर,	लघुतम
महान,	महत्तर,	महत्तम
न्यून,	न्यूनतर,	न्यूनतम
निकट,	निकटतर,	निकटतम

(छ) 1. द 2. द 3. स 4. ब
5. ब 6. स 7. द 8. स

पाठ–23 क्रिया [Verb]

(क) 1. जो शब्द किसी कार्य के होने या किए जाने अथवा किसी स्थिति, घटना या अस्तित्व का बोध करवाते हैं, क्रिया कहलाते हैं; जैसे– खाना, पीना, हँसना, दौड़ना आदि।
2. जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा दे, तो ऐसी स्थिति में प्रेरणार्थक क्रिया होती है।
जैसे– माँ माली से पौधे लगवाती हैं।
3. क्रिया के भेद दो आधार पर किए जाते हैं। 1. कर्म के आधार पर, 2. संरचना के आधार पर।
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–
अकर्मक क्रिया – चिड़िया उड़ती है।
सकर्मक क्रिया – मीरा भजन गाती है।
संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं–
प्रेरणार्थक क्रिया – माँ नौकरानी से काम करवाती है।
नामधातु क्रिया – हमें किसी की वस्तु को हथियाना नहीं चाहिए।

संयुक्त क्रिया – वह पढ़ चुका था।
पूर्वकालिक क्रिया – वह खाना खाकर विद्यालय गया।
कृदंत क्रिया – दादी बैठी है।

(ख) 1. अकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया 3. अकर्मक क्रिया
4. अकर्मक क्रिया 5. सकर्मक क्रिया 6. सकर्मक क्रिया
7. सकर्मक क्रिया 8. सकर्मक क्रिया

(ग) 1. दाल बच्चे
2. वेतन मुनीम
3. चॉकलेट मुझे
4. फ़ाइल मुकेश

(घ) 1. कृदंत 2. नामधातु 3. चलना
4. सकर्मक 5. माँ 6. द्विकर्मक

(ङ) रँगना, हथियाना, शर्माना, गठियाना, झुठलाना, गरमाना।

(च) 1. नामधातु क्रिया 2. प्रेरणार्थक क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. संयुक्त क्रिया 5. नामधातु क्रिया 6. पूर्वकालिक क्रिया

(छ) अकर्मक – गिरना, रुलाना, हँसना
सकर्मक – तोड़ना, टूटना, घिसना, पिसना, धोना, पढ़ाना

(ज) 1. नेताजी आकर भाषण देंगे।
2. वह खाना खाकर स्कूल जाएगा।
3. सिपाही बंदूक उठाकर शत्रु को गोली मारेगा।
4. अध्यापिका जी कक्षा में आकर पढ़ाने लगेंगी।

(झ) 1. स 2. ब 3. ब 4. स 5. अ
6. ब 7. ब 8. स 9. द 10. ब

पाठ–24 काल [Tense]

(क) 1. क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने या करने का समय जाना जाए, काल कहलाता है। काल के तीन भेद हैं– भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल।

2. क्रिया का जो रूप कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध करवाता है, भूतकाल कहलाता है। भूतकाल के छह भेद हैं– सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, अपूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, हेतु–हेतुमद् भूत।

3. क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं–

सामान्य वर्तमान काल – पनिहारिन पानी भरती है।
उर्वशी नृत्य करती है।
संदिग्ध वर्तमान काल – नौकर चाय लाता होगा।
वह अपना पाठ याद करती होगी।
अपूर्ण वर्तमान काल – कृष्ण बाँसुरी बजा रहे हैं।
गोपियाँ नाच रही हैं।

4. क्रिया के जिस रूप द्वारा भविष्यत् काल में कार्य के होने की संभावना या संदेह हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– शायद आज तुम्हें इनाम मिले।

(ख) 1. अपूर्ण वर्तमान काल 2. हेतु–हेतुमद् भूत 3. संदिग्ध भूत
4. हेतु–हेतुमद् भूत 5. संभाव्य भविष्यत् काल 6. आसन्न भूत
7. सामान्य भविष्यत् काल 8. पूर्ण भूत 9. सामान्य भूत
10. अपूर्ण भूत

(ग) 1. भूतकाल 2. आसन्न भूत 3. भविष्यत्
4. संदिग्ध 5. अपूर्ण भूत

(घ) 1. गीतांजलि ने कहानी लिख ली है। – आसन्न भूत
2. किसान बीज बो रहा है। – अपूर्ण वर्तमान काल
3. मैं कल आऊँगा। – सामान्य भविष्यत् काल
4. नौकर भोजन बनाता होगा – संदिग्ध वर्तमान काल
5. यदि माँ ने अनुमति दी तो कल सिनेमा देखने चलेंगे – हेतु–हेतुमद् भूत

(ङ) 1. रोया होगा। 2. जीता होगा। 3. खरीदे होंगे।
4. लिखा होगा। 5. धोए होंगे।

(च) 1. स 2. ब 3. ब 4. अ
5. अ 6. द

पाठ–25 अव्यय (अविकारी) शब्द [Indeclinable words]

1. क्रियाविशेषण

(क) 1. जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण के चार भेद हैं– कालवाचक क्रियाविशेषण, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, रीतिवाचक क्रियाविशेषण।
2. जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने की रीति के विषय में बताते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

(ख) 1. ब 2. अ 3. द 4. स

(ग) 1. स्थानवाचक क्रियाविशेषण 2. कालवाचक क्रियाविशेषण
3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण 4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

(घ) 1. इधर–उधर – स्थानवाचक क्रियाविशेषण
2. अचानक – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3. अकसर – कालवाचक क्रियाविशेषण
4. अचानक – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
5. अभी – कालवाचक क्रियाविशेषण
6. फटाफट – रीतिवाचक क्रियाविशेषण
7. थोड़ा–सा – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
8. प्रायः – रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ङ) 1. ब 2. स 3. ब 4. स 5. द

(च) छात्र स्वयं करें।

2. संबंधबोधक

(क) 1. पर 2. के लिए 3. बिना 4. के पीछे

(ख) 1. अनीता बगीचे के भीतर गई और वहाँ बैठकर फूलों को निहारने लगी।

2. तेज़ आँधी के कारण जामुन का पेड़ अचानक गिर पड़ा।

3. सीमा की अपेक्षा मोहित सुंदर है।

4. वह तुम्हारे पश्चात गया और पहले लौटा।

5. खेल दिखाने के बाद छोटा जादूगर सामान समेटने लगा।

(ग) 1. के पहले – कालवाचक

2. के ऊपर – स्थानवाचक

3. के विपरीत – विरोधवाचक

4. के बदले – विनिमयवाचक

5. के द्वारा – साधनवाचक

(घ) 1. की अपेक्षा – सीमा की अपेक्षा शालू काफ़ी समझदार है।

2. से पहले – मामा जी ने आने से पहले माँ को बता दिया था।

3. के बाद – कंचन के बाद तुम्हारी परीक्षा का परिणाम आएगा।

4. पीछे – तुम्हारे पीछे मेरा बैग पड़ा है।

5. सहित – राम अपने परिवार सहित घूमने गया।

(ङ) 1. द 2. ब 3. ब 4. अ 5. स

3. समुच्चयबोधक

(क) 1. समान स्थिति वाले पदों, वाक्यांशों को आपस में समानता के आधार पर जोड़ने वाले अव्यय 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' कहलाते हैं।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं– कारणवाचक, उद्देश्यवाचक, संकेतवाचक, स्वरूपवाचक।

3. जो अव्यय शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके दो भेद हैं– समानाधिकरण समुच्चयबोधक, व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

(ख) 1. लव तथा कुश श्री राम के पुत्र थे।

2. यद्यपि भीष्म पितामह नहीं चाहते थे तथापि उन्हें महाभारत के युद्ध में लड़ना ही पड़ा।

3. रावण ने हनुमान की पूँछ में आग लगवाई परंतु वीर हनुमान ने सारी लंका जला दी।

4. श्री कृष्ण और सुदामा दोनों ही बाल सखा थे।

5. राहुल बीमार है इसलिए परीक्षा नहीं दे सका।

6. मोहन अवश्य आता किंतु बीमार है।

(ग) समानाधिकरण समुच्चयबोधक – और, तथा, पर, इसलिए।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक – अर्थात, ताकि, यद्यपि, जिससे

(घ) 1. गोपी गरीब है लेकिन ईमानदार है।
2. मोहन तथा पंकज दोनों गहरे मित्र हैं।
3. रमेश तुम्हारा काम करना चाहता था परंतु नहीं कर सका।
4. गीता बीमार है इसलिए परीक्षा नहीं दे सकी।
5. मेरी पुस्तक आशा या लता में से किसी एक ने चुराई है।
6. बच्चा रोने लगा क्योंकि वह नीचे गिर गया था।
7. दान देना चाहिए ताकि परलोक सुधर जाए।
8. आप चाय लेंगे अथवा कॉफी।
9. फूलों पर ओस के कण मानो मोती जैसे चमक रहे थे।
10. कठोर परिश्रम करें जिससे परीक्षा में सफलता प्राप्त हो सके।

(ङ) 1. द 2. ब 3. स 4. द

4. विस्मयादिबोधक

(क) ऐसे अविकारी शब्द जो वक्ता अथवा लेखक के भय, क्रोध, आश्चर्य, शोक, घृणा, स्वीकृति आदि मनोभावों को प्रकट करें, विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं।

(ख) 1. विस्मयबोधक 2. हर्षबोधक 3. घृणाबोधक 4. शोकबोधक
5. क्रोधबोधक 6. भयबोधक 7. स्वीकृतिबोधक 8. अनुमोदनबोधक
9. संबोधनबोधक 10. चेतावनीबोधक

(ग) 1. थू-थू!, छीः-छीः!
2. हाय!, ओह!
3. चुप!, जा-जा!
4. शाबाश!, वाह-वाह!

(घ) 1. वाह – वाह! आज तो मेले में मज़ा आ गया।
2. सावधान – सावधान! आगे गहरा गड्ढा है।
3. अरे – अरे! तुम कब आए?
4. हाय – हाय! तुम्हें ये चोट कैसे लगी।
5. ऐ – ऐ! तुम इधर आओ।

5. निपात

(क) 1. वाक्य में निपात की भूमिका अर्थ को प्रभावित करने के लिए होती हैं। ये वाक्य में आकर उसके संपूर्ण अर्थ को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। उदाहरणस्वरूप– आकाश ने ही प्लेट तोड़ी है। इस वाक्य में प्लेट तोड़ने वाला 'आकाश ही है, कोई दूसरा नहीं'।
2. जो अविकारी शब्द वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रियाविशेषण के साथ बल देने के लिए लगाए जाते हैं, उन्हें निपात कहते हैं; जैसे– भी, ही, भर, तक, मात्र, तो, केवल, सिर्फ़, लगभग, मत, हाँ आदि।

(ख) 1. मुझे **केवल** पाँच रुपये चाहिए।
2. सेविका काम **नहीं** करेगी चाहे कितना कहो।
3. रामलाल ने मदद के लिए **हाँ** की थी। उस पर भरोसा न रखो।

4. फूल **मत** तोड़ो।
5. सीता तुम कुछ **तो** खा लेती।

(ग) 1. उसे खाने **भर** का सामान दे दो बस, तुम्हारे दरवाज़े पर पड़ा रहेगा।
2. **सिर्फ़** दो रोटियों से उसका क्या होगा।
3. रमा ने आने की खबर **तक** नहीं की।
4. तुम्हें **तो** मेरे साथ चलना होगा।
5. तुम कल **ही** लौट आना।

(घ) 1. अ 2. अ 3. ब 4. अ

पाठ-26 वाक्य-विचार [Syntax]

(क) 1. सार्थक शब्दों का समूह व्याकरणिक नियमानुसार व्यवस्थित करने पर जब पूर्ण अर्थ का बोध करवाता है, तो उसे वाक्य कहते हैं।
2. वाक्य के दो अंग उद्‌देश्य और विधेय हैं। वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्‌देश्य कहते हैं। इसमें कर्ता तथा कर्ता का विस्तार आते हैं। उद्‌देश्य के विषय में जो कुछ भी कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। इसमें कर्म, कर्म का विस्तार, क्रिया तथा क्रिया का विस्तार आदि आते हैं; जैसे– कुछ बच्चों ने देशभक्ति का गीत गाया।

कुछ बच्चों ने	देशभक्ति का गीत गाया
उद्‌देश्य	विधेय

3. वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं– अर्थ के आधार पर तथा रचना के आधार पर।
4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्य।

(ख) 1. संकेतवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. निषेधवाचक वाक्य
4. प्रश्नवाचक वाक्य 5. इच्छावाचक वाक्य 6. विस्मयादिबोधक वाक्य
7. विधिवाचक वाक्य 8. संदेहवाचक वाक्य

(ग) 1. मिश्रित वाक्य 2. सरल वाक्य 3. सरल वाक्य 4. मिश्रित वाक्य
5. संयुक्त वाक्य 6. मिश्रित वाक्य 7. संयुक्त वाक्य 8. संयुक्त वाक्य

(घ) 1. सरल वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. संयुक्त वाक्य
4. आज्ञावाचक वाक्य 5. निषेधवाचक वाक्य 6. प्रश्नवाचक वाक्य

(ङ) 1. स 2. द 3. अ 4. ब
5. र 6. य

(च) 1. स 2. स 3. द 4. द 5. द

पाठ-27 वाक्य शुद्‌धि [Correction of Incorrect Sentences]

(क) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓
6. ✗ 7. ✓ 8. ✓ 9. ✗ 10. ✗

(ख) 1. मुझे यह पुस्तक चाहिए।
2. तुम्हें गुरु जी बुला रहे हैं।
3. वे लोग आ गए हैं।
4. नेता जी भाषण देते हैं।
5. उसके प्राण निकल गए।
6. अच्छे विचारों को ग्रहण करो।
7. पिता जी अखबार पढ़ रहे हैं।
8. गीतों की एक किताब ले आइए।
9. इन सभी को सज़ा मिलनी चाहिए।
10. यहाँ गन्ने का ताज़ा रस मिलता है।

पाठ–28 विराम-चिह्न [Punctuation Marks]

(क) 1. हे ईश्वर! इसे सद्बुद्धि दो।
2. अरे! नीलकंठ कहाँ चला गया?
3. हमने पूछा, पारसमणि है तुम्हारे पास?
4. क्या सोच रहे हो, तबीयत तो ठीक है न?
5. मुनीर, क्या हम ठीक जगह आ पहुँचे हैं?
6. महाराज! मेरी रक्षा करो, मैं आपकी शरण में आया हूँ।
7. माँ ने पूछा– "ये आम, अमरूद और जामुन कहाँ से लाए?"
8. तोते ने कहा– "भला भेड़िए से भिड़कर मैना को क्या मिला?"
9. छि:! चोरी करते हो, क्या तुम्हारे माता-पिता ने यही सिखाया है।
10. चौधरी साहब, यह खेत किसका है? मुझे डर है कि खड़ी फसल को अभी काटना होगा।

(ख) 1. स 2. द 3. ब 4. ब
5. ब 6. द

पाठ–29 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ [Idioms and Proverbs]

(क) 1. दूध का दूध, पानी का पानी करना 2. कंगाल होना
3. मान न मान मैं तेरा मेहमान 4. आ बैल मुझे मार
5. तेते पाँव पसारिए, जैती लाँबी सौर 6. बाँछें खिलना
7. लाल-पीला होना 8. आँखों में धूल झोंकना
9. उल्लू बनाना 10. फूटी आँख न सुहाना

(ख) 1. गागर में सागर 2. नौ-दो ग्यारह 3. कान काटते
4. नज़र फेरने 5. चेहरे का रंग

(ग) 1. द 2. स 3. ह 4. अ 5. ब

(घ) 1. अँगूठा दिखाना (मना करना) – जब मैंने अपने मित्र से मदद माँगी, उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

2. आँख का तारा (बहुत प्यारा) – नमन अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।
3. कान भरना (चुगली करना) – अमन हमेशा अजय के बारे में अध्यापिका के कान भरता रहता है।।
4. जिसकी लाठी, उसकी भैंस (शक्तिशाली की ही जीत होती है) – यह कहावत आज भी बिलकुल सही है कि जिसकी लाठी, उसकी भैंस होती है।
5. नौ दो ग्यारह होना (भाग जाना) – चोर सिपाही को देखते ही नौ दो ग्यारह हो गया।

(ङ)	1. ब	2. ब	3. स	4. ब	5. ब
	6. स	7. अ	8. स	9. स	10. द

पाठ-30 मौखिक अभिव्यक्ति [Oral Communication]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ-31 अपठित गद्यांश [Unseen Passage]

(क)	1. ब	2. अ	3. द	4. स	
	5. स				
(ख)	1. द	2. द	3. स	4. ब	5. ब
(ग)	1. स	2. द	3. स	4. द	5. अ
	6. स	7. अ			
(घ)	1. ब	2. स	3. द	4. स	5. ब
	6. द	7. स			
(ङ)	1. अ	2. ब	3. स	4. द	5. अ
	6. स	7. अ			
(च)	1. अ	2. स	3. अ	4. स	5. ब

(छ) छात्र स्वयं करें।
(ज) छात्र स्वयं करें।
(झ) छात्र स्वयं करें।
(ञ) छात्र स्वयं करें।

पाठ-32 अपठित पद्यांश [Unseen Poetry]

(क)	1. ब	2. द	3. ब	4. स	
(ख)	1. स	2. द	3. ब	4. स	5. अ
(ग)	1. द	2. द	3. द	4. स	
(घ)	1. ब	2. द	3. ब	4. द	5. द

(ङ) छात्र स्वयं करें।
(च) छात्र स्वयं करें।
(छ) छात्र स्वयं करें।

पाठ–33 दैनंदिनी–लेखन [Diary Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–34 संवाद–लेखन [Dialogue Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–35 सूचना–लेखन [Notice Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–36 पत्र–लेखन [Letter Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–37 अनुच्छेद–लेखन [Paragraph Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–38 निबंध–लेखन [Essay Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–39 विज्ञापन–लेखन [Advertisement Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न–पत्र–1

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न–पत्र–2

विद्यार्थी स्वयं करें।